श्री वीतरागाय नमः

विशाद पार्श्वनाथ पूजन विधान

माण्डना

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 8 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 8 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 8 अर्घ्य
कुल 24 अर्घ्य

कृतिकार:

प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति

आचार्य श्री १०८ विशदसागरजी महाराज

www.vishadsagar.com

प्रकाशक:

श्री पंकज कुमार जैन, अनिता जैन, पीयूष जैन, प्रियंका जैन
अंकुश जैन, मनीषा जैन, आयुष आस्था जैन,
नहटौर (उ०प्र०), मो० 9737061766

Printed by :

OMEGA PRINTOPACK (P) LTD.

(An ISO 9001: 2015 Certified Company)

Plot No. 133,134,135, Sector-6A, SIDCUL-IIE, Haridwar-249403 (UK)

Mobile: 9997030304, website : www.omegaprintopack.com

कृति	:	विशद श्री पार्श्वनाथ पूजन विधान (लघु)
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम 2019, प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी महाराज क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
	:	ब्र. प्रदीप भैया जी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी 9829076085 ब्र. आस्था दीदी 9660996425, ब्र. सपना दीदी 9829127533
संयोजन	:	ब्र. आरती दीदी- मो0.8700876822
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017 2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी, 9810570747 3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879 4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली मो. 09818115971, 09136248971

लघु विनय पाठ-1

(दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आय

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्र चित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं।।

.....

आप्तेन विशदो धर्मः, परोपकृतये शताम्।
गम्भीर ध्वननाऽ भाषिः, वर्ण मुक्तेन् निस्पृहम्।।

अर्थ- आप्त ने अपनी गम्भीर वाणी से निर्मल और जीवों के कल्याण हेतु धर्म का स्वरूप भव्य जीवों के कल्याण हेतु कहा है।

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमान विंशति जिनः, अनन्तानन्त सिद्ध, निर्वाण क्षेत्र समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निव.स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।
शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

दोष अठारह से रहित, प्रभु छियालिस गुणवान।
देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान।।1।।
ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ।
द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्य यथेष्ठ।।2।।
ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान।
संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस विदेहों में रहें, विहरमान तीर्थेश,
भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्य विशेष।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विहरमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध।
पूज रहे हम भाव से, जो हैं जगत् प्रसिद्ध।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन लोक में जो रहे, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ महान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।

वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते॥
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।
दोहा- अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)।।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापन (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध ।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध ।।
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी,कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्माण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ,जन्मादिक रुज विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ,भव सागर से तिर जाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ ।।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ,कामादिक दोष नशाएँ ।

देवादि सर्व जिन ध्यायें ,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय कामबाण विध वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।
चरु यह रसदार चढ़ाएँ ,हम क्षुधा रोग विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें ,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।
रत्नोंमय दीप जलाएँ ,हम मोह तिमिर विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें ,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।
सुरभित यह धूप जलाएँ ,कर्मों से मुक्ती पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें ,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।7।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हं सर्व पूज्येसु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।
फल ताजे शिव फलदायी ,हम चढ़ा रहे हैं भाई ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें ,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।8।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हं सर्व पूज्येसु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व.स्वाहा।
यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ ,अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ ।

देवादि सर्व जिन ध्यायें ,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।9।।
ॐ ह्रीं श्री अर्ह सर्व पूज्येसु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सम करो ,कर दो यह उपकार।।

(शांतये शांतिधारा)

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- जैन धर्म जयवंत है ,तीनों लोक त्रिकाल।
गाते जैनाराध्य की ,भाव सहित जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय ,सर्व साधु के चरण नमन ।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय ,जैनागम का है अर्चन ।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में ,तीन काल के जिन तीर्थेश ।
पंच विदेहों के तीर्थंकर ,पूज रहे हम यहाँ विशेष ।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी ,देवों के जो रहे विमान ।
भावन व्यन्तर के गेहों में , रहे जिनालय महति महान ।।3।।

मध्य लोक में मेरु कुलाचल,गिरि विजयार्थ हैं इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु,नन्दीश्वर हैं मंगलकार ।।4।।
रुचक सुकुण्डल गिरि पे जिनगृह,सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन,मानस्तंभ हैं पूज्य महान।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक,बतलाए दश धर्म विशेष ।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ,सहसनाम पावें तीर्थेश ।।6।।

दोहा- सोलह कारण भावना,और अठाई पर्व ।
पंच कल्याणक आदि हम,पूज रहें हैं सर्व ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं मूलनायक 1008 श्री .....सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत,पंच ऐरावत,पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर,नवदेवता,मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर,पंचमेरु सम्बन्धित कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय,गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र,अतिशय क्षेत्र,दशलक्षण,सोलह काराण,रत्नत्रयादि धर्म,ढाई द्वीप स्थित तीन कम नो करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- जिनाराध्य को पूजकर,पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद,पाएँ पद निर्वाण।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री पार्श्वनाथ पूजा विधान (लघु)

''स्थापना''

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! , हे पार्श्व प्रभो करूणाधारी।
हे विघ्न विनाशक शांतीकर , महिमा महान मंगलकारी।।
हम भाव सहित ध्याते उर में , हे प्रभु ! हृदय में आ जाओ।
हम भक्त आपके अज्ञानी , ना हमें प्रभु जी विसराओ।।
दोहा- भवसागर में डूबते , हमको दो आधार।
आह्वानन् करते हृदय , हे जिन ! बारम्बार।।

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

''ज्ञानोदय छन्द''

हो कर्म के फल से जन्म मरण , पर असमय मरण कहे खोटे।
निज मात स्वजन के आँसू बरसे , सागर पड़े बड़े छोटे।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने , पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में , सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हो तकरार भयंकर जलते , आपस में प्राणी जिससे।

है भवाताप अन्तर उर में, भव भव में जलते हैं इससे।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।
ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
क्षण भंगुर संयोग जगत के, उनको हमने निज माना।
हम मुट्ठी बांध के आये हैं पर, हाथ पसारे ही जाना।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।
ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
काँटों से जो बचते हैं, वे फूल कभी ना पाते हैं।
सम्यक् जो पुरुषार्थ करें ना, मोक्ष कभी ना जाते हैं।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।
ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
मौज उड़ाते भोजन कर ज्यों, अगर बुराई त्यों खाये।
रोग व्याधियाँ पाप नशें सब, बीज पुण्य के हम बोये।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को हम ध्याते हैं।

तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।
ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दीप जलाकर आरति करके, रात अंधेरी ना हटती।
पर श्रद्धा के दीप जलाएँ, कर्मों की होवे घटती।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।
ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
जलकर धूप जगत महकाए, दुर्गन्धी का नाश करें।
आतम सौरभ में जो खोएँ, सिद्धशिला पर वास करें।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।
ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
हम बदलेंगे युग बदलेगा, हर मुश्किल का हल पाएँ।
जो भी जैसा आज करेंगे, कल वैसा ही फल पाएँ।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।
ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल

प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाया, जिसका कोई मूल्य नही।
अटक रहे हैं जो कीमत में, वे पाते ना ठौर कही।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतिप्रदायक लोक में, जिनवर शांतीकार।
जिनके चरणों में विशद, देते शांतीधार।।

(शान्तये शांतिधारा)

दोहा- राही मुक्ति मार्ग के, मुक्ति के दातार।
पुष्पांजलि करते चरण, नत हो बारम्बार।।

(दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्)

''पंचकल्याणक के अर्घ्य''

(दोहा-छन्द)

वैशाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।
चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।
सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाए माथ।।2।।
ॐ ह्रीं पौष बदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।
संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार।।3।।
ॐ ह्रीं पौष बदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चैत कृष्ण वदि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।
समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान।।4।।
ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।
कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण।।5।।
ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- पाप नरक का मूल है, पुण्य की जड़ पाताल।
शिवपद राही पार्श्व जिन, की गाते जयमाल।।

तर्ज – श्री सिद्धचक्र का पाठ.....

श्री पार्श्वनाथ भगवान, करें गुणगान, सभी मिल भाई।
जीवों को शांति प्रदायी।।टेक।।
जिनवर जग में हितकारी हैं, जो अतिशय करुणाधारी है।
जिनकी महिमा इस जग में, है हितदायी।।
जीवों को शांति प्रदायी।।1।।
जो पार्श्वनाथ जिन को ध्यायें, उसकी हर बाधा टल जाए।
जिन अर्चा कर, जीवों ने मुक्ती पाई।।
जीवों को शांति प्रदायी।।2।।
हो भूत प्रेत की बाधाएँ, कोई रोग शोक व्याधी आए।
ज्वर कुष्ट आदिक भी जाए नशाई।।
जीवों को शांति प्रदायी।।3।।
जो करे परिश्रम भी भारी, मेहनत बेकार जाए सारी।
जिन अर्चा करके पाय, सफलता भाई।।
जीवों को शांति प्रदायी।।4।।
जो संक्लेशित हो रहते हैं, आँखों से आँसू बहते हैं।
उन जीवों ने भी अतिशय शांती पाई।।
जीवों को शांति प्रदायी।।5।।
हम भक्त द्वार पर आए हैं, अरदास चरण में लाए हैं।
हे प्रभो! आपकी फैली जग प्रभुताई।।

जीवों को शांति प्रदायी।।6।।

दोहा- नाथ आपके द्वार पर, होती पूरी आस।
आशा लेकर आए हम, करो पूर्ण अरदास।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पुष्पांजलि करने चरण, पाने पुष्प पराग।
यही भावना है ''विशद'', बुझे राग की आग।।

(इत्याशीर्वादः)

प्रथम वलयः

दोहा- शत् इन्द्रों से पूज्य हैं, जग के तारणहार।
कल्पतरु के पुष्प ले, पूजें मंगलकार।।

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ

(शम्भू छन्द)

शोक रहित हे नाथ! आपका, तरु अशोक मन भाता है।
हं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति दिलाता है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय अशोकतरु सत्प्रातिहार्य मंडिताय अशोकतरु युक्त शोभनपद प्रदाय ह्मल्व्र्यूं बीजाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देव पुष्पवृष्टि करते हैं ,जो शिव के दर्शायक हैं।
भं बीजाक्षर पूज रहे हम , अतिशय शांति प्रदायक हैं।।2।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सुरपुष्पवृष्टि शोभनपद प्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।
दिव्य ध्वनि खिरती है प्रभु की , मोह महातम क्षायक है।
मं बीजाक्षर पूज रहे हम , अतिशय शांति प्रदायक है।।3।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दिव्यध्वनि शोभनपद प्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।
चौंसठ चँवर ढौरते हैं सुर ,ऋद्धिसिद्धि दर्शायक हैं।
रं बीजाक्षर पूज रहे हम , अतिशय शांति प्रदायक है।।4।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय चामरोज्जवल सत्प्रातिहार्य मंडिताय चामरढोरण प्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।
सप्त भयों से रहित प्रभू का , सिंहासन शिवदायक है।
घं बीजाक्षर पूज रहे हम , अतिशय शांति प्रदायक है।।5।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय सिंहासन सत्प्रातिहार्य मंडिताय सिंहासन प्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।
भामण्डल शुभ सप्त भवों का , अतिशय जो दर्शायक है।
झं बीजाक्षर पूज रहे हम , अतिशय शांति प्रदायक है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय भामण्डल सत्प्रातिहार्य मंडिताय भामण्डल प्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

धीर मधुर गंभीर दुन्दुभि, नाद भी शांति प्रदायक है।
सं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय दुंदुभि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दुंदुभिनाद शोभनपद प्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोहें तीन छत्र प्रभु के सिर, तीन लोक दर्शायक हैं।
खं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य मंडिताय छत्रत्रय शोभनपद प्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

बीजाक्षर ह भामादिक शुभ, प्रातिहार्य संयुक्त प्रधान।
अर्चा जिनके द्वारा करते, श्री जिनेन्द्र की महिमावान।।9।।

ॐ ह्रीं ह भामादिक अष्ट बीजाक्षर युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

(द्वितीय वलय)

दोहा- सिद्धों के गुण आठ हैं, शास्वत रहे महान।
अष्टकर्म को नाशकर, पाएँ शिव सोपान।

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(सिद्धों के अष्ट गुणों के अर्घ्य)

जो ज्ञान प्रकट ना होने दे, वह ज्ञानावरणी कर्म कहाँ।
जो कर्म नाश कर प्रकट करे, वह केवलज्ञान प्रकाश रहा।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म रहित अनंत ज्ञानयुक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण जहाँ में, दर्शन गुण का घात करे।
नाश करे इसका जो साधक, केवल दर्शन प्राप्त करे।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म रहित अनंत दर्शन गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मोह महा दुखदाई है, इसने जग को भरमाया है।
जिनने इसको ठुकराया है, उनने समकित गुण पाया है।।3।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित अनंत सुख युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अंतराय है कर्म घातिया, वीर्य सुगुण का नाशी है।
उसका घात किए जिन स्वामी, बल अनन्त की राशि है।।4।।

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म रहित अनंत शक्ति युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्यकर्म वेदनीय के नाशी, जो अव्याबाध सुगुण पाए।
जो कर्माधीन सुखों को तजकर, निराबाध सुख उपजाए।।5।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहित अव्याबाध गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आयु कर्म का नाश किए, फिर अवगाहन गुण उपजाए।
जो चतुर्गति से मुक्त हुए, अरु इस भव से मुक्ति पाए।।6।।

ॐ ह्रीं आयुकर्म रहित अवगाहनत्व गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु गोत्र कर्म का नाश किए, फिर अगुरुलघु गुण उपजाए।
जो ऊँच नीच का भेद मैट, सिद्धों के अतिशय सुख पाए।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म रहित अगुरुलघुत्व गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नामकर्म का नाश किए, गुण सूक्ष्मत्व जगाए हैं।
अविकारी हो गए अमूरत, सिद्धशिला को पाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं नामकर्म रहित सूक्ष्मत्व गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

अष्टकर्म के नाशी जिनवर, होते हैं आठों गुणवान।
भवि जीवों के लिए लोक में, अतिशयकारी क्षेम निधान।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म रहित अष्ट गुण युक्त श्री चिन्तामणि

पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

(चार आराधना चार कषाय रहित जिन के अर्घ्य)

दोहा- शिवपथ के राही बनें, चउ आराधन वान।
अर्चा करते भाव से, जिन पद में धार ध्यान।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

देव शास्त्र गुरु के प्रति पच्चिस, दोष रहित हो सद् श्रद्धान।
यह सम्यक् दर्शन आराधन, करके पाएँ शिव सोपान।।
महाराधना किए पूर्व में, अतः जगाए केवलज्ञान।
जगत पूज्य फिर हुए लोक में, कहलाए हैं प्रभु भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शन आराधना प्राप्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्दाचार आदि वसु गुणयुत, ज्ञानाराधन रही महान।
जिसके द्वारा जग के प्राणी, पाते वीतराग विज्ञान।
महाराधना किए पूर्व में, अतः जगाए केवलज्ञान।
जगत पूज्य फिर हुए लोक में, कहलाए हैं प्रभु भगवान।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाराधना प्राप्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विध चारित्र महान।

भावसहित पालन करने से, कर्मों का होवे अवशान।।
महाराधना किए पूर्व में, अतः जगाए केवलज्ञान।
जगत पूज्य फिर हुए लोक में, कहलाए हैं प्रभु भगवान।।3।।
ॐ ह्रीं चारित्राराधना प्राप्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्वादश विध तप करके होवे, अष्टकर्म का शीघ्र विनाश।
तप आराधन करके पाए, श्री जिनवर जी शिवपुर वास।।
महाराधना किए पूर्व में, अतः जगाए केवलज्ञान।
जगत पूज्य फिर हुए लोक में, कहलाए हैं प्रभु भगवान।।4।।
ॐ ह्रीं सुतपाराधना प्राप्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चार कषायों के अर्घ्य)

क्रोध कषाय उदय में होते, रह ना पाए सद् श्रद्धान।
नाश किए सम्यक्त्व प्रकट हो, पाए प्राणी केवल ज्ञान।।5।।
ॐ ह्रीं क्रोध कषाय रहिताय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सम्यक्त्वी ना रह पाए जो, जिसके उदय में आए मान।
नाश किए सम्यक्त्व प्रकट हो, पाए प्राणी केवल ज्ञान।।6।।
ॐ ह्रीं मान कषाय रहिताय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की घाती माया, होती है कहते विद्वान।
नाश किए सम्यक्त्व प्रकट हो, पाए प्राणी केवल ज्ञान।।7।।
ॐ ह्रीं माया कषाय रहिताय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोभ कषायवान जो प्राणी, कर ना पाते निज कल्याण।
नाश किए सम्यक्त्व प्रकट हो, पाए प्राणी केवल ज्ञान।।8।।
ॐ ह्रीं लोभ कषाय रहिताय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चार कषाय विनाश करे जो, होवे चउ आराधन वान।
मोक्ष मार्ग के राही बनते, प्राप्त करें वे पद निर्वाण।।9।।
ॐ ह्रीं कषाय रहित आराधना सहित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- ध्यान लगाया आपने, जीते सब उपसर्ग।
गुण माला गाते विशद, पाने हम अपवर्ग।।

(राधेश्याम छन्द)

इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सुरेन्द्र, गणेन्द्र सुमहिमा गाते हैं।
जिनवर के पंचकल्याणक में, खुश हो जयकार लगाते हैं।।1।।
जब गर्भागम में प्रभु आते, तब रत्न वृष्टि करते भारी।
यह तीर्थंकर प्रकृति का फल, इस जग में गाया शुभकारी।।2।।

जब जन्म कल्याणक होता है, तब यशोगान सुर करते हैं।
तीनों लोकों के जीव सभी, उस समय भाव शुभ करते हैं।।3।।
इस जग में रहकर के स्वामी, इस जग में न्यारे रहते हैं।
सबसे रहते हैं वह विरक्त, सब उनको अपना कहते हैं।।4।।
गुणगान करें सब जीव सदा, यह पुण्य की ही बलिहारी है।
जो उभय लोक में जीवों को, होता शुभ मंगलकारी है।।5।।
सब कर्म नाश करकें स्वामी, मुक्ति पथ पर बढ़ जाते हैं।
है शिवनगरी में सिद्धशिला, जिस पर निजधाम बनाते हैं।।6।।
दोहा- यह संसार असार है, जान सके ना नाथ।
आज ज्ञान हमको हुआ, अतः झुकाते माथ।।
ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा- भक्त कई तारे प्रभू, आई हमारी बार।
पास बुलालो शीघ्र ही, अब ना करो अवार।।
।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं।।
तीस चौबीसी के तीर्थंकर, सात सौ बीस मनहारी हैं।
विशद भाव से प्रभु के पद में, शत् शत् ढोक हमारी है।।
ॐ ह्रीं श्री तीस चौबीसी के सात सौ बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री 108 विशदसागर जी का अर्घ

गुरूवर की हम महिमा गाते हैं, अपने हम सौभाग्य जगाते हैं।

चरणों में आते हैं, अर्घ चढ़ाते हैं, करते हैं गुरुपद नमन॥
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, गुरुवर का शुभ आशिष पाया है॥॥
ॐ ह्रूँ प0पू0 साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर यतीवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामिती स्वाहा।

श्री सर्व साधु परमेष्ठी का अर्घ

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते हैं, उपसर्ग परिषह को भी सहते हैं।
समता जो धारे हैं, मुनिवर हमारे हैं, करते हम गुरु पद नमन॥
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, मुनिवर का आशिष पाया है॥॥
ॐ ह्रः श्री साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामिती स्वाहा।

समुच्चय महार्घ

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन॥
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष॥
दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ॥
ॐ ह्रीं श्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि,

सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्च महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोले)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।

(शान्तये शान्तिधारा-3)(कायोत्सर्ग करोम्यहं)(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।

करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

'आशिका लेने का मंत्र'

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाँए जिन आशीष।।

हे प्रभो चरणों में तेरे.....

हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये,
भावना अपनी का फल हम पा गये।।टेक।।
वीतरागी हो,तुम्हीं सर्वज्ञ हो।
मुक्ति का मारग,तुम्हीं से पा गये,
हे प्रभु! चरणों में,तेरे आ गये।।1।।
विश्व सारा ही झलकता ज्ञान में,
किन्तु प्रभुवर लीन हैं निज ध्यान में।
ध्यान में निज-ज्ञान को हम पा गये,
हे प्रभु ! चरणों में तेरे आ गये।।2।।
तुम बताये जगत् के सब आत्मा,
द्रव्य-दृष्टी से सदा परमात्मा।
आज निज परमात्मा,पद पा गये,
हे प्रभु ! चरणों में तेरे आ गये।।3।।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा– चालीसा गाते यहाँ, होके नत अभिराम।
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करूँ प्रणाम।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हिताकरी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पञ्चाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।
नाग युगल मृत्यु को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया।।
प्रभु बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहिक्षेत्र में ध्यान लगाए।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।

धरणेन्द्र पद्मावती आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षत्र लगाया भाई।
चैत कृष्ण को चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयं भू गाए।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ति पाई।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते।।
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।
पार्श्वप्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।।
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।

दोहा– पाठ करें चालीसा दिन, दिन में चालीस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख-शांति सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

जाप:- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री पार्श्वप्रभु की आरती

तर्ज- हो जिनवर हम सब उतारें.....

आज करें हम पार्श्वप्रभु की, आरती मंगलकारी-2।
जिन मंदिर में पार्श्वप्रभू हैं-2, सबके संकटहारी।
हो बाबा, हम सब उतारें थारी आरती।।टेक।।

काशी नगरी जन्म लिए प्रभु, मात पिता हर्षाए-2।
अश्वसेन माँ वामा देवी-2, के जो लाल कहाए।।
हो बाबा, हम सब उतारें थारी आरती।।1।।

तीस वर्ष की भरी जवानी, में प्रभु दीक्षा धारे-2।
पंच महाव्रत समिति गुप्तियाँ, चारित आप सम्हारे।।
हो बाबा, हम सब उतारें थारी आरती।।2।।

कई उपसर्ग सहनकर के भी, निज का ध्यान लगाए-2।
हार मान कर के शत्रू भी-2, चरणों में झुक जाए।।
हो बाबा, हम सब उतारें थारी आरती।।3।।

गिरि सम्मेद शिखर पे प्रभु जी, अतिशय ध्यान लगाए-2।
स्वर्ण भद्र शुभ कूट से मुक्ती-2, पार्श्व प्रभु जी पाए।।
हो बाबा, हम सब उतारें थारी आरती।।4।।

जिन मंदिर में नर नारी सब, नित प्रति दर्शन पाएँ-2।।
''विशद'' आरती करके प्रभु की-2, मन वांछित फल पाएँ।।
हो बाबा, हम सब उतारें थारी आरती।।5।।

आचार्य श्री विशदसागरजी का चालीसा

हृदय क्षमा है आपके, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज।।
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम।।

(चौपाई)

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधारी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी।
भेष दिगम्बर अनुपम धारे, जन-जन को तुम लगते प्यारे।।
नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे।
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है।।
कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा।
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है।।
मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी।
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना।।
मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया।
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन-जन को दे शीतल छाया।।
सत्य अहिंसादिक व्रत पाले, सकल चराचर के रखवाले।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर-घर दीप जले सुखदाई।।
गिरि सम्मेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथजी अतिशयकारी।
गुरू विमलसागरजी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धरा।।
गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।
हैं वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर।।
अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ीं उमंगें।
सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए।।
दीक्षा का गुरु आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें।
अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया।।
अगहन शुक्ल पञ्चमी जानो, पचास बीससौ सम्वत् मानो।
सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो।।

विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी।
दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणागिरि का झूमा अम्बर।।
जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया।
कीर्ति आपकी जग में भारी, जन-जन के तुम हो हितकारी।।
परपीड़ा को सह न पाते, जन-जन के गुरु कष्ट मिटाते।
बच्चे बूढ़े अरु नर-नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी।।
भक्त जनों को गले लगाते, हिल-मिलकर रहना सिखलाते।
कई विधान तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले।।
मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ती भी करवाते।
स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी।।
जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ती से वो भर जाता।
'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें।।
तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया।
जहाँ-जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं।।
प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी।
जैन-अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं।।
एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता।
दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते।।
लेखन चिंतन की वो शैली, धो दे मन की चादर मैली।
सदा गूँजते जय-जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे।।
भक्ती से हम शीश झुकाते, 'विशद गुरू' तुमरे गुण गाते।
चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें।।

दोहा– 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
माया मोह विनाशकर, हरें पूर्ण अज्ञान।।
सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
सुख-शांती सौभाग्य का, पावे शुभ आशीष।।

(संघस्थ) – ब्र. आरती दीदी

आचार्य श्री विशदसागरजी की आरती

(तर्ज:–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारें।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर